कठपुतलियां हैं, जो वह खेल दिखा रही हैं जिसे किसी अन्य ने तय कर दिया था जिसने इस सब की उत्पत्ति की है। खैर, इसकी चर्चा हम बाद में कर सकते हैं।

अनाम महिलाः मैं सबको सीखने के मूल्यांकन पर वापिस लाना चाहती हूं जो हमारा मूल विषय था। मेरी जिज्ञासा थी कि होशंगाबाद कार्यक्रम में छात्रों की प्रगति को कैसे आंका जाता था। पूरे समय आप सांख्यिकी शब्द का ज़िक्र करते रहे, मगर मुझे यह स्पष्ट नहीं हुआ कि आप मूल्यांकन कैसे करते थे। चूंकि आप उस दल के सदस्य थे, आप छात्रों की उपलब्धियों का आकलन कैसे करते थे? क्या यह माना जाता था कि सारे छात्रों को सफल होना है क्योंकि वे ग्रामीण छात्र हैं? टीम इसे कैसे संभाल पाती थी? जी हां, सीखने का मूल्यांकन।

पंचापकेसनः आप छात्रों के मूल्यांकन के बारे में पूछ रही हैं। मैंने कहा कि मूल्यांकन इस तरह किया जाता था जिससे मूल्यांकन की प्रक्रिया बेहतर बने। हम सामान्य परीक्षा का उपयोग नहीं करते थे। सवाल काफी सावधानीपूर्वक यह ध्यान में रखकर बनाए जाते थे कि क्या पढ़ाया गया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रायोगिक परीक्षा होती थी। इसके लिए बाहर से उपकरण लाए जाते थे, मूलतः दिल्ली विश्वविद्यालय से। और हर छात्र की परीक्षा उस तरह होती थी जैसे उच्च कक्षाओं में होती है, मिडिल स्कूल की तरह नहीं। यह सब बढ़िया से होता था। मूल्यांकन उपयुक्त ढंग से किया जाता था। अब बदकिस्मती से उच्च कक्षाओं में भी यह सब मखौल बन गया है। मगर उपयुक्त तरीका क्या है? जैसे वह तरीका जो आई.एस.सी. ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में अपनाता है। कि छात्र एक प्रयोग करेंगे, आप उनसे निष्कर्ष निकालने को कहेंगे, और उनकी जांच करेंगे। हालांकि मूल्यांकन उपयुक्त ढंग से किया जाता था मगर दुर्भाग्यवश, प्रायोगिक परीक्षा में छात्रों के परिणाम बहुत अच्छे नहीं होते थे, और सैद्धांतिक तो और भी बुरा होता था। इसलिए हमें एक ग्राफ बनाने के तरीके का उपयोग करना होता था। अन्यथा सारे बच्चों को 100 में से 0-10 या बहुत हुआ तो 0-20 अंक मिलते। लिहाज़ा हम परीक्षा में विभेदन बढ़ाने के लिए छात्रों को एक ग्राफ पर अंकित करते थे। इसके आधार पर आप कह सकते थे कि यह छात्र उस छात्र से कुछ बेहतर है। और हम पहली बार प्रश्नों का मूल्यांकन करने के बाद उन प्रश्नों को छांटते थे, जो विभेद दर्शाते हों और उन्हें मूल्यांकन में ज़्यादा वज़न (वेटेज) देते थे। इन सारी चीज़ों का खूब अध्ययन हुआ है और इन पर किताबें लिखी गई हैं, मगर मैं इस क्षेत्र का विशेषज्ञ नहीं हूं।

फरीदा खानः अब हम पोर्टफोलियो मूल्यांकन पर एक तकरीर सुनेंगे।

तपस्विनी साहू

पोर्टफोलियो मूल्यांकन

कल जब मैं ट्रेन से यात्रा कर रही थी तो मेरे साथ कई सारे वैज्ञानिक भी थे। वे लोग स्ट्रिंग सिद्धांत, सापेक्षता और परमाणु विज्ञान और परमाणु भौतिकी की बात कर रहे थे। तो, मैंने सोचा मैं कहां हूं? मैं यही सोचती रही कि हार्डी ने मुझे यहां क्यों बुलाया है? मगर इसने मुझे यह सोचने को प्रेरित किया कि साझा सूत्र क्या है। जैसा मैं समझती हूं, साझा सूत्र अवलोकन है। अवलोकन से शुरू करें, तो मैं कहूंगी कि भौतिक शास्त्री वस्तुओं का अवलोकन करते हैं और अपने अवलोकनों के बारे में बात करते हैं और अमूर्त अवधारणाएं प्रतिपादित करते हैं। बतौर मनोवैज्ञानिक मेरा सम्बंध बच्चों का अवलोकन करने, वयस्कों का अवलोकन करने और यह समझने से है कि बच्चे सीखते कैसे हैं। तो यह सूत्र था जो मैं दोनों के बीच खोज पाई। यहां मैं यह करने जा रही हूं कि आपको थोड़ा आपके बचपन में ले जाऊंगी। हम लोग गुड़गांव में हरिटेज स्कूल में काम करते रहे हैं और यह अध्ययन एक प्रोजेक्ट का हिस्सा है। प्रोजेक्ट का नाम है संपूर्ण स्कूल परिवर्तन (whole school transformation), हम इस स्कूल में पिछले डेढ़ साल से काम कर रहे हैं। हम करते यह हैं कि स्कूल में नर्सरी से केजी तक थीम आधारित शिक्षण करते हैं। कुछ शिक्षण अधिगम तय किए जाते हैं और सीखने की इस थीम में गुंथे जाते हैं। फिर शिक्षक पाठ योजनाएं बनाते हैं और थीम उजागर होने लगती है। हमने यह काम उठाया और थीम-आधारित ढंग से आगे बढ़ने का निर्णय किया और चाहते थे कि बच्चे कई सारी चीज़ें कर सकें, कई सारी चीज़ों का अवलोकन कर सकें और उनके बारे में लिख सकें। जब हम आगे बढ़े तो मूल्यांकन की चुनौती सामने आ गई। हमें कैसे पता चले कि बच्चे वास्तव में सीख रहे हैं, कि वे कुछ कर रहे हैं। कैसे पता करें? क्या हम सिर्फ सीखने के अंतिम परिणामों पर ध्यान दें? या सीखने की प्रक्रिया पर? इस सवाल ने हमें हर बच्चे के लिए एक पोर्टफोलियो तैयार करने को प्रेरित किया। दरअसल पोर्टफोलियो विभिन्न समयों पर, विभिन्न स्रोतों से प्राप्त और विभिन्न किस्म के प्रमाणों का संग्रह है।

अब आपके साथ चर्चा के लिए मैं कक्षा 2 की एक बच्ची के पोर्टफोलियों के विश्लेषण का उपयोग करूंगी। थीम थी 'समुदाय'। पोर्टफोलियो को देखते हुए मैं वास्तव में सीखने के विभिन्न क्षेत्र देख सकती थी जिनमें गणित, विज्ञान और

भाषा विकास शामिल हैं। पोर्टपोलियो में इस बात का प्रमाण है कि ये आपस में कैसे जुड़े हुए हैं। मैंने बच्ची की लिखाई के कुछ नमूने छांटे हैं, और कुछ नमूने संख्या की समझ के विकास के हैं, ताकि देख सकें कि बच्ची इस सबमें क्या सीख रही है। लड़की का नाम श्रेया है। 'समुदाय' थीम में प्रवेश के तौर पर शुरुआत में बच्चे पूरे स्कूल में घूमे और स्कूल में रखे एक फिश एक्वेरियम का अवलोकन किया। तो उसने यह लिखा था, "2, 2 fishes, fishes were silver, black, orange. The fish had their tails, the tails were telling the right direction. There were many shells over there, fishes were big and small, and they were very beautiful." अन्यत्र उसने अपने घर का नक्शा बनाया है। आगे बढ़ते हुए वे दिशाएं, रास्ते व नक्शे भी समझते चलते हैं। तो उसने एक नक्शा बनाया और उसके बारे में बताया, "Get into the building, go straight and press the lift, then get into the lift, press 14th floor, get out of the lift, go to the right side, press the bell and get in. Then go straight, take left for the kitchen, take right for the storeroom, take left and right and the rooms are in a line. So this is my house map." इसी प्रकार से किसी अन्य समय पर जब वे अवलोकन के हुनर के विकास पर ध्यान दे रहे थे, तब राजमा और मैथी के बीज बोए गए थे और वह बताती है कि कैसे धूप, पानी और इन सारी चीज़ों के साथ बीज एक पौधा बन सकता है। बच्चे वास्तव में बाहर जाकर ज़मीन के एक टुकड़े पर इस पूरे विकास का अवलोकन करते हैं। तो जब बच्चे अपने अवलोकन लिखते हैं, उसी समय वे उन्हें अपने पोर्टफोलियो में भी रिकॉर्ड करके रखते जाते हैं। तो जब आप विभिन्न समयों पर और अलग-अलग परिस्थितियों में बच्ची की लिखाई की प्रक्रिया को देखते हैं, तो आप वास्तव में देख सकते हैं कि वह किस ढंग से बातों को प्रस्तुत करती है, विचारों को कैसे व्यवस्थित करती है, श्रोताओं को कैसे बताती है, जिनमें शिक्षक भी है। बच्ची मनन भी करती है। तो जब बच्ची पोर्टफोलियो में लिख रही है, तो वह अपने पूरे काम पर मनन भी कर रही है। उदाहरण के लिए, जब वे ट्रेज़र हंट (एक खेल) पर गए थे, उसके बारे में वह लिखती है, "it was very fun doing treasure hunt. It was also like going right, left, straight, and doing directions."

इसमें शिक्षक का अवलोकन क्या है? शुरू में श्रेया स्वयं अपने लिए लिख रही थी, अब वह पाठकों को दिमाग में रखती है और उसके अनुसार अपने विचार लिखने व संप्रेषित करने का प्रयास कर रही है। मेरे पास यहां कुछ पोर्टफोलियो उदाहरण के रूप में हैं, कोई चाहे तो देख सकता है। उसके लिखने के संदर्भ में एक बात बहुत स्पष्ट है कि समय के साथ उसका लेखन कैसे विकसित हुआ है और कैसे वह खुद को व्यक्त कर रही है। अर्थात आप सिर्फ अंतिम परिणाम को नहीं देख रहे हैं, बल्कि उस बच्ची की सीखने की प्रक्रिया को भी देख रहे हैं। इसी प्रकार से उसकी संख्या की समझ के बारे में भी यह देखना रोचक है कि जब वह एक खाली संख्या रेखा पर काम करती है तो परिमाण की उसकी समझ कैसे विकसित होती है।

जब पोर्टफोलियो को देखते हैं, तो न सिर्फ बच्ची की सीखने की प्रक्रिया का प्रमाण मिलता है बल्कि यह भी दिखता है कि बच्ची अपने काम के बारे में मनन कर रही है। शिक्षक की टिप्पणियां भी मौजूद हैं। और कभी-कभी हम पालकों के लिए यह पूछते हुए नोट भी भेजते हैं कि बच्चे घर पर क्या कर रहे हैं ताकि वे अवलोकन करके रिकॉर्ड कर सकें और हमें भेज सकें। यानी पोर्टफोलियों में विभिन्न स्रोतों से और विभिन्न तरीकों से जानकारी एकत्रित की जाती है। वास्तव में यह बच्ची के विकास को चित्रित करता है - ठोस वस्तुओं के साथ खोजबीन के बिंदु से लेकर उस स्तर तक जहां वह सीखी हुई बातों का उपयोग विभिन्न स्थानों पर, विभिन्न परिस्थितियों में और सीखने के विभिन्न अनुभवों पर करती है। इस प्रक्रिया में भी हम देखते हैं कि श्रेया कभी-कभी शिक्षक का सहारा लेती है, और ज़्यादा स्वतंत्र रूप से काम करने की ओर बढ़ती है, अपने आप चीज़ें करने लगती है।

पाठ्यक्रम के संदर्भ में इसका एक असर यह है कि यह अपेक्षाकृत उभरता हुआ पाठ्यक्रम है। ऐसा नहीं है कि सिलेबस तय हो चुका है और शिक्षक उसका पालन कर रही है। यानी जब बच्चे यह सब कर रहे हैं, और रिकॉर्ड कर रहे हैं, तब स्कूल में शिक्षकों के बीच भी सोच विचार की प्रक्रिया चलती है। वे पोर्टफोलियो का अध्ययन करते हैं और तय करते हैं कि बच्चों के इस समूह के साथ अगला काम क्या करना चाहिए। इसी तरह काम आगे बढ़ता है; बच्चे, शिक्षक और पालक सब इसमें शामिल होते हैं।

तो जब हम मूल्यांकन की बात करते हैं तो बात इतनी ही नहीं है कि अंत में एक परीक्षण कर लिया। टेस्ट मूल्यांकन का एक तरीका है। आप मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके अपना सकते हैं जो बच्चों के सीखने में ज़्यादा समृद्धता लाएंगे। इसके अलावा इस मामले में होता यह है कि बच्ची अपने काम में ज़्यादा रुचि लेती है, ज़्यादा ज़िम्मेदारी लेती है और फिर कहती है, "चलो, अब मैं अगला काम क्या करूं?" इस तरह से सीखने का परिणाम और प्रक्रिया दोनों स्पष्ट हो जाते हैं। अर्थात पोर्टफोलियो का उपयोग बच्ची के काम को देखने के एक तरीके के रूप में किया जा सकता है, जिससे जानकारी-पूर्ण व अंतिम मूल्यांकन के बीच एक संतुलन बन सकेगा। आखिरकार, जैसा कि मैं समझती हूं,

मूल्यांकन का मतलब है बच्चों के पास, उनके साथ बैठना है।

चर्चा

अनाम महिलाः मुझे सिर्फ प्रक्रिया सम्बंधी कुछ जानकारी चाहिए। जब आप पोर्टफोलियो की बात करती हैं, तो यह प्रत्येक बच्चे के लिए एक पोर्टफोलियो है या पूरी कक्षा के लिए शिक्षक का एक पोर्टफोलियो है?

तपस्विनीः हर बच्चे का एक पोर्टफोलियो होता है।

अनाम महिलाः ठीक है। और दूसरा सवाल यह है कि फिर शिक्षक को दिन के अंत में, कक्षा समाप्त होने के बाद कितना समय पोर्टपोलियो के विश्लेषण में लगाना होगा ताकि यह तय कर सके कि अगले दिन क्या करना है।

तपस्विनीः वास्तव में वे यह विश्लेषण तीन महीने बाद करते हैं। पूरे पोर्टफोलियो का विश्लेषण तीन-तीन महीने में किया जाता है। मगर हम करते यह हैं कि हर हफ्ते मिलते हैं और शिक्षक बच्चों के सारे अवलोकन चलती कक्षा में करते हैं क्योंकि हर कक्षा में दो शिक्षक होते हैं। तैयारी के सत्र में शिक्षक पोर्टफोलियो में से बच्चों का कुछ काम और अपने अवलोकन प्रस्तुत करते हैं ताकि यह तय कर सकें कि अगला काम क्या करना है। तो एक साप्ताहिक चक्र चलता है। मगर वास्तव में पूरे पोर्टफोलियो तीन महीने में एक बार देखते हैं।

अनाम महिलाः तीसरा सवाल यह था कि आप कतिपय किस्म की अवधारणात्मक उपलब्धियों, या अवधारणाओं को लागू करने की क्षमता या सवाल हल करने की क्षमता के आकलन के लिए औज़ार विकसित करने के काम को कैसे जोड़ पाते हैं। मेरा मतलब है कि ऐसे मूल्यांकन साधन का विकास और उन्हें कक्षा में उपयोग करना किस तरह से पोर्टपोलियो का हिस्सा बन पाता है?

तपस्विनीः हम यह काम ऐसे करते हैं कि जब शिक्षक एक से दस तक की संख्या की समझ की योजना बना रही है, तो शुरुआत में काफी सारे ठोस अनुभव और खेल-खिलवाड़ होते हैं, जिनमें बच्चे समूहों में काम करते हैं। फिर बच्चे अपनी समझ बनाने की ओर बढ़ते हैं, जहां हम उन्हें कुछ निर्धारित काम देते हैं, और फिर कुछ वर्कशीट्स होती हैं - कुछ स्ट्रक्चर्ड वर्कशीट्स होती हैं जबकि कुछ ओपन-एंडेड - ताकि वे जो कुछ सीखा उसे दर्शा सकें। यह एक तरीका है। अब तक हमने यही किया है - ठोस से शुरू करके विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग करने की कुशलता के विकास को देखने के लिए।

सावित्री सिंहः मैं सावित्री सिंह हूं, दिल्ली विश्वविद्यालय से। जब आप मूल्यांकन करते हैं, मेरा मतलब जब आप हर बच्चे का पोर्टफोलियो बनाते हैं, तो दिन के अंत में आपके पास हर बच्चे का रिकॉर्ड होता है। तो आपके पास बच्चे सीखने के अलग-अलग स्तर पर होंगे। तो क्या आपकी प्रक्रिया में अलग-अलग बच्चों के लिए अलग-अलग सामग्री बनाते हैं? या क्या आप उन्हें एक ही सामग्री से पढ़ाते हैं? अंतर होने के बावजूद क्या अगले दिन सबको एक ही चीज़ पढ़ाई जाएगी?

तपस्विनीः वास्तव में यह हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है, मैं यह नहीं कह रही हूं कि हम पूरी तरह संतुष्ट हैं, या हमने वह सब कर लिया है जो कर सकते हैं। मगर हां, इस बात का ख्याल रखना पड़ेगा क्योंकि शिक्षक आकर कहते ही हैं, “मेरी कक्षा में तीन स्तरों के बच्चे हैं, तो मैं क्या करूं?□ इसके लिए हम काफी कोशिश करते हैं कि तीन अलग-अलग स्तरों के लिए सीखने की सामग्री बनाएं, चाहे वह एक ही अवधारणा से सम्बंधित हो। ऐसा हम रोज़ाना नहीं कर सकते। मगर हमारे पास हुनर का एक कालखंड होता है। दिन भर के कार्यक्रम में हमारे पास थीम का कालखंड होता है, जब सब लोग सब कुछ साथ-साथ करते हैं, मगर एक हुनर का कालखंड होता है जब बच्चे छोटे-छोटे समूहों में काम करते हैं, ताकि शिक्षक उनके साथ उनके स्तर के अनुरूप गहराई से काम कर सके। इस तरह से हम काम करते हैं।

सत्यजीत रथः जैसा मुझे समझ में आया है, पोर्टफोलियो एक-एक बच्चे के लिए बनता है। क्या आपके पास कुछ ऐसे मापदंड हैं, जिनके ज़रिए पोर्टफोलियों के संग्रह का उपयोग शिक्षकों के मूल्यांकन व समृद्धिकरण में किया जा सके?

तपस्विनीः होता यह है कि हमारे पास किसी भी थीम के लिए कुछ अधिगम स्तर होते हैं। ये शिक्षक के लिए एक बेंचमार्क की तरह होते हैं जिनके आधार पर शिक्षक देख सकते हैं कि बच्चों ने किस स्तर तक उन अवधारणाओं, हुनरों और रवैयों को हासिल किया है। मगर हमारे पास कोई औपचारिक तरीका नहीं है, कोई चेकलिस्ट नहीं है। लिहाज़ा हम शिक्षक के अवलोकनों, बच्ची के काम पर निर्भर करते हैं। और हम एक रुब्रिक लागू करने का प्रयास कर रहे हैं, मगर अभी तक कर नहीं पाए हैं।

आनंदः मेरा नाम आनंद है, ज्ञानशाला प्रोजेक्ट से। मैडम, ऐसी कक्षाओं में जहां बहुत सारे बच्चे हैं, और जहां शिक्षक काम नहीं करना चाहते, आपने तो उनके काम को बढ़ा दिया है। इससे तो काम और भी कठिन हो जाएगा। जैसे, हम लोग झुग्गी बस्तियों में काम करते हैं, जहां पालक बहुत जागरूक नहीं हैं। तो मेरे मन में सवाल यह आता है कि

यह सब कितना उपयोगी रहेगा। शुक्रिया।
तपस्विनीः यह बहुत मुश्किल सवाल है। जब संख्या ज़्यादा हो, तो यह बहुत मुश्किल है। मैं आपसे सहमत हूं। हमारे यहां कक्षा में तीस बच्चे हैं, मगर दो शिक्षकों के साथ। हम कह सकते हैं कि यह एक लक्ज़री है। हां, ज़्यादा संख्या होने पर, पचास से ज़्यादा बच्चे और एक शिक्षक हो, तो यह मुश्किल है। मगर ग्रामीण इलाके में भी ऐसा होता है कि छात्रों की संख्या थोड़ी कम होती है। हमने धामपुर के एक स्कूल में काम करना शुरू किया था। इसे धामपुर शुगर मिल चलाती थी। धामपुर छोटा सा कस्बा है। तो पालक तो चाहते हैं... शिक्षक-पालक संवाद सशक्त रखना ज़रूरी है क्योंकि पालक चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छे से सीखें मगर वे नहीं जानते कि क्या मदद करें। मुझे लगता है कि उस स्कूल से हमने यही सीख ली है कि इस मामले में कैसे आगे बढ़ें। मगर हां, मुझे पता नहीं, वास्तव में मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है।
फरीदाः छः लोग सवाल पूछने का इन्तज़ार कर रहे हैं। हमारे पास काफी समय है क्या? ठीक है, पीछे कोई बहुत देर से...
रश्मि पालीवालः मैं एकलव्य से रश्मि हूं। शिक्षक छात्र अनुपात तो समस्या का मात्र एक आयाम है, मगर मुझे लगता है कि ज़्यादा बुनियादी मुद्दा शिक्षक की अपनी तैयारी का है कि वह सीखने के उद्देश्यों को समझने व संभालने में कितना समर्थ है - आपका लक्ष्य क्या है, आप क्य अवलोकन करते हैं, आप शिक्षक के अवलोकनों से क्या निष्कर्ष निकालते हैं। तो क्या आप शिक्षक की तैयारी और शिक्षकों के लिए उपलब्ध समर्थन के बारे में थोड़ा बताएंगी? वैसे तो यह सेमीनार के एक अन्य सत्र का विषय है मगर यहां आप कुछ कहेंगी क्या?
फरीदाः जवाब से पहले क्या हम दो सवाल और ले सकते हैं।
किरण प्रसादः मेरा नाम किरण प्रसाद है और मैं रायपुर में शिक्षा संसाधन केंद्र में काम करता हूं। मेरा सवाल पोर्टफोलियो से सम्बंधित है। यह बच्चे का एक रिकॉर्ड है कि बच्चा सीखने के किसी एपिसोड के बारे में क्या सोचता है और शिक्षक बच्चे के बारे में क्या सोचता है। तो यह एक तरह का आकलन है। मेरा सवाल है, जब यह प्रक्रिया पूरी हो जाती है, जब रिकॉर्ड मुकम्मल हो जाता है, मुझे यकीन है कि तब बच्चे अलग-अलग स्तरों पर होंगे, विभिन्न क्षेत्रों में उनकी रुचियां अलग-अलग होंगी। एक बार जब ये रिकॉर्ड पूरे तैयार हो जाते हैं, तो उसके बाद क्या होता है? जैसे, हो सकता है कि बच्चा, मान लीजिए, कला और हस्तकला में कुछ रुचि दर्शाता है और गणित में कम रुचि दर्शाता है। फिर क्या होता है? मैं जानने को उत्सुक हूं, क्या इसका कोई असर होता है या क्या प्रक्रिया होती है?
सुशील जोशीः मैं होशंगाबाद से सुशील जोशी हूं। मेरा सवाल सवाल कम टिप्पणी ज़्यादा है। प्रोफेसर पंचापकेसन ने मूल्यांकन के बारे में बात की मगर उन्होंने एक घटक के बारे में कुछ नहीं कहा। एक ओर तो वह सब है जो बच्चे करते हैं, दूसरी तरफ वह सब है जो शिक्षक करता है और उन्होंने शिक्षक के मूल्याकन के बारे में कुछ नहीं कहा। मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। और हो.वि.शि.का. में जिस ढंग से पहले घटक को संभाला गया था - परीक्षा के बाद सैम्पल उत्तर पुस्तिकाओं को जांचना - से पता चलता था कि बच्चे प्रश्न पत्र को किस रूप में लेते थे, परीक्षा में बच्चों के प्रदर्शन को समझने की कोशिश होती थी ताकि शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण और यहां तक कि मूल्यांकन पद्धति पर भी फीडबैक प्राप्त हो सके। इस घटक की बात बिलकुल नहीं हुई।
फरीदाः ठीक है, यह आखरी सवाल था।
तपस्विनीः जहां तक शिक्षकःछात्र अनुपात का सवाल है, तो हम एक टीम के रूप में उस स्कूल में पिछले करीब डेढ़ साल से मौजूद हैं, यह स्कूल के साथ एक लंबे समय का जुड़ाव है। शुरू में हमने शिक्षकों के साथ सीखने-सिखाने के विभिन्न पक्षों को लेकर तीन माह का सघन प्रशिक्षण ज़रूर किया था। मगर साथ ही हम हर हफ्ते एक नियोजन सत्र में शिक्षकों से मिलते हैं। यहां हम उनसे कहते हैं कि वे वह सारी सामग्री लेकर आएं जो बच्चों ने बनाई है। हम इसके बारे में बात करते हैं और फिर तय करते हैं कि आगे क्या करना है। यह काफी सघन प्रक्रिया होती है और कई बार ऐसा होता है कि शिक्षक व्याख्या नहीं कर पाते। तो वे बच्चों के पोर्टफोलियो लेकर आते हैं और पूछते हैं कि अब क्या करें। हमारे पास एक पूरा समूह है इसलिए हम इसे थोड़ी संयुक्त गतिविधि बना पाते हैं। हम एक-दूसरे से पूछते हैं कि हमारी कक्षाओं में क्या-क्या हुआ है और एक-दूसरे से सीखते हैं। यह प्रक्रिया चल तो रही है मगर मुझे पता नहीं किस हद तक। कहने का मतलब कि मैंने बेंचमार्क्स या कसौटियों के आधार पर शिक्षकों का मूल्यांकन नहीं किया है। मगर मैं 6-8 माह पहले और आज के बीच शिक्षकों में विकास को देख सकती हूं। सीखने में विविधता को लेकर चिंता कुछ शिक्षकों में अभी भी है, मगर कुछ शिक्षक इसे अलग-अलग ढंग से संबोधित कर पाते हैं। तो यह एक चलती हुई प्रक्रिया है।
इसी से जुड़ी हुई बात शिक्षकों के मूल्यांकन की है। यह ज़्यादा उनके अपने आत्म चिंतन के रूप में है कि क्या ठीक

तरह से हुआ है, क्या ठीक से नहीं हुआ, या मैंने यह नहीं किया। हम करते यह हैं कि कक्षा में बैठकर 'आईडिस्कवरी' की ओर से कक्षा अवलोकन करते हैं। और हम शिक्षकों के साथ कक्षा के तौर-तरीकों पर फीडबैक सत्र करते हैं। यह एक तरीका है। दूसरा तरीका यह है कि हम वीडियो फिल्म बनाते हैं ताकि शिक्षक खुद ही देख सकें।
उदाहरण के लिए, यदि वे कक्षा में बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे, जो प्रायः होता है क्योंकि वे बच्चों को चुप कराना चाहते हैं, तो वे खुद से पूछते हैं कि क्या यह सही तरीका है? तो यह स्व-मूल्यांकन और हमारी ओर से फीडबैक के रूप में ही ज़्यादा होता है। हम दो तरीकों से शिक्षकों का विकास व सशक्तिकरण कर पाए हैं। मुझे पता नहीं कि यह किस हद तक आपके सवाल का जवाब है, मगर हमारे पास फिलहाल तो इतना ही है।
आप पूछ रहे थे कि तब क्या होता है जब बच्ची की रुचि कम हो जाती है और वह कुछ और करना चाहती है। ऐसा कुछ मामलों में होता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि शिक्षक चाहते हैं कि बच्चे एक ही चीज़ करें और वे करते हैं और कुछ शिक्षक ऐसे होते हैं जो लंबे समय से कक्षा में रहे हैं और बच्चों को बेहतर समझते हैं, तो कई बार वे बच्चों को तब तक के लिए छोड़ देते हैं जब तक कि वे वापिस उसी पर नहीं आ जाते। कभी-कभी वे रुचि पैदा करने के लिए सीखने के अनुभव रचते हैं। तो मेरे ख्याल में इसका कोई एक जवाब नहीं है। शिक्षक अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। मुझे लगता है यही एक तरीका उनके लिए कारगर होता है बजाय इसके कि हम उन्हें निर्देश दें कि इस तरह से करो।
फरीदाः मुझे लगता है, मूल्यांकन के लिए इससे कहीं अधिक समय चाहिए क्योंकि मेरे ख्याल में यह इस बात पर गहरा असर डालता है कि शिक्षण किस ढंग से किया जाएगा और कक्षा में क्या पढ़ाया जाएगा। दोनों वक्ताओं और श्रोताओं को धन्यवाद कि वे पूरे दिन यहां रहे। रमा कांत, कुछ घोषणाएं वगैरह करनी हैं क्या?
रमा कांत अग्निहोत्रीः नहीं, सिर्फ फरीदा खान आपको और प्रोफेसर पंचापकेसन और तपस्विनी साहू को धन्यवाद देना है। क्या मैं यह उम्मीद करूं कि आप सब कल सुबह 9:20-9:25 तक यहां पहुंच जाएंगे ताकि हम ठीक साढ़े नौ बजे शुरू कर सकें। धन्यवाद।